VOL- XI | ISSUE- VII | JULY | 2024 | PEER REVIEW e-JOURNAL | IMPACT FACTOR 8.02 | ISSN 2349-638x

'चम्पा काले काले अच्छर नहीं चीन्हती' कविता में व्यक्त गांव के प्रति आत्मीयता

डॉ. बालाजी श्रीपती भुरे
प्रोफ़ेसर एवं अध्यक्ष, हिंदी विभाग
शिवजागृती वरिष्ठ महाविद्यालय, नालेगाँव
ता.चाकुर जि.लातूर (महाराष्ट्र)

हिंदी साहित्य के इतिहास में आधुनिक काल के अंतर्गत प्रगतिवादी काव्य-धारा के एक सशक्त हस्ताक्षर एवं प्रयोगशील मेधावी प्रतिभा के कवि त्रिलोचन का जन्म 20 अगस्त 1917 को उत्तरप्रदेश के सुल्तानपुर जिले के कटघरा चिरानीपट्टी में जगरदेवसिंह के घर हुआ और निधन 9 दिसंबर 2007 को गाजियाबाद में हुआ। उनका मूल नाम वासुदेव सिंह था। आपने काशी हिंदू विश्वविद्यालय से हिंदी तथा अंग्रेजी में एम.ए. किया तथा लाहौर से संस्कृत में शास्त्री की उपाधि प्राप्त की। इन्हें मराठी, गुजराती, बंगला, संस्कृत, फारसी आदि विविध भाषाओं का गहन अध्ययन था।

हिंदी साहित्य में बहुत कम ऐसे कवि हैं जिन्हें अपनी परंपरा का इतना गहरा और व्यापक ज्ञान था। जिस प्रकार तुलसी ने अपनी नई भाषा का अविष्कार किया था, ठीक उसी प्रकार त्रिलोचन सिंह ने भी भाषा की इसी अभिव्यक्ति शक्ति को पहचान कर नए भाषाई प्रयोग किए हैं। उन्होंने हिंदी में प्रयोगधर्मिता का समर्थन किया है। उनका कहना था कि, "भाषा में जितने प्रयोग होंगे उतनी वह समृद्ध होगी।" उन्होंने हमेशा नवसृजन को प्रेरणा दी है। इसीलिए नागार्जुन, शमशेर और त्रिलोचन इन तीनों को आधुनिक हिंदी कविता की प्रगतिशील काव्यधारा के तीन स्तंभ माना जाता है। उनके कवि कर्म की असली प्रयोगशाला उनके चारों ओर का जीवन ही है।

त्रिलोचन शास्त्री बाजारवाद के प्रबल विरोधी रहे हैं। वे कविता, कहानी, ग़ज़ल, सानेट आदि विविध विधाओं के साथ-साथ पत्रकारिता के क्षेत्र में भी सक्रिय रहे हैं। आपने प्रभाकर, हांस, आज, समाज जैसी पत्र-पत्रिकाओं का संपादन भी किया है। परंपरा और आधुनिकता का उनकी रचनाओं में अद्भुत समन्वय मिलता है।

कहानी संग्रह - देशकाल, सबका अपना-अपना आकाश।
काव्य संग्रह - धरती, गुलाब और बुलबुल, दिगंत, ताप के ताए हुए दिन, शब्द, उस जनपद का कवि हूँ, तुम्हें सौंफता हूँ, अनकही भी कुछ कहनी है, अमोला, मेरा घर, जीने की कला आदि।
समीक्षा ग्रंथ - काव्य और अर्थबोध।
सम्पादन - मुक्तिबोध की कविताएँ।

इनके साहित्यिक योगदान को देखकर इन्हें सन 1989 - 90 में हिंदी अकादमी 'शलाका सम्मान' मिला। साथ ही साथ हिन्दी साहित्य में उत्कृष्ट योगदान के लिए 'शास्त्री' और 'साहित्य रत्न' जैसी उपाधियों से सम्मानित किया गया। 1982 में 'ताप के ताए हुए दिन' के लिए इन्हें 'साहित्य अकादमी' का पुरस्कार, मध्य प्रदेश का मैथिलीशरण गुप्त सम्मान आदि विविध पुरस्कारों से सम्मानित किया गया है। त्रिलोचन सिंह स्वयं को गांव के आदमी के साथ तथा गांव की समस्याओं के साथ जोड़ते हैं। आप की कविताएं विविध अभाव चित्रों को यथार्थता के साथ प्रस्तुत करने में सक्षम रही है। 'चम्पा काले काले अच्छर नहीं चीन्हती' यह आपकी चर्चित कविता है।

'चम्पा काले काले अच्छर नहीं चीन्हती' :-

'चंपा काले काले अक्षर नहीं चीन्हती' यह कविता 'धरती' काव्य संग्रह से ली गई है। यह कविता सन 1940 - 41 के आसपास की है। इसमें चंपा स्वयं बोलती है। वह चंपा काले-काले अक्षर नहीं चीन्हती और उसे बड़ा आश्चर्य होता है कि इन काले-काले चिन्हों से ये सभी स्वर कैसे निकलते हैं। यहां कवि के काव्य की मुख्य विशेषता जीवन के प्रति रागात्मक आग्रह है। इसीलिए उनका काव्य भावात्मक रूप से उच्च कोटि का माना जाता है। इस कविता को निम्नलिखित बिंदुओं के द्वारा समझा जा सकता है। जैसे -

मूल संवेदना :-

त्रिलोचन जी ने इस कविता में चित्रित लड़की चंपा के माध्यम से ग्रामीण जीवन में रहनेवाले एक बे पढे-लिखे आदमी की स्वाभाविकता, सहजता और प्रामाणिकता को अभिव्यक्त किया है। इसमें चम्पा जैसी शरारती, नटखट लड़की का चित्रण है, जो पढ़ना-लिखना नहीं जानती। इस कविता के माध्यम से कवि ने पढ़ाई के महत्व के साथ-साथ शहर की चकाचौंध करनेवाली अबोहवा का विरोध करते हुए ग्रामीण जीवन के प्रति अपने प्रेम तथा आकर्षण को व्यक्त किया है।

मेहनत के प्रति लगाव :-

मेहनत को गांव के लोग अपने जीवन का मुख्य अंग मानते हैं, परिश्रम ही उनकी मूल प्रवृत्ति रही है। इसी प्रवृत्ति के अनुरूप इस कविता में चित्रित चम्पा भी एक मेहनती लड़की है। वह ग्वाले सुंदर की लड़की है, जो हर दिन अपनी गाय और भैंसों की चरवाही करने जाती है। कवि त्रिलोचन का अपनी कविता में यह कहना कि,

"चंपा चौपायों को लेकर
चरवाही करने जाती है"[1]

यह चम्पा के कार्य के प्रति उसका लगाव तथा कर्मशील वृत्ति को ही व्यक्त करता है।

शरारती एवं नटखटता :-

इस कविता में गांव में रहनेवाली चंपा के माध्यम से गाँव के बच्चों की चंचलता, शरारती एवं नटखटता को अंकित किया गया है। बच्चों का यह बचपन का शरारती एवं नटखटता दिन-ब-दिन खत्म होती जा रही है। आज शिक्षा के बोझ तले और माता-पीताओं की बढ़ती इच्छाओं के कारण बच्चे अपना बचकानापन मानो भूल गए हैं। बच्चों का शरारती और नटखटता आज कुछ मात्रा में केवल ग्रामीण परिवेश में बची हुई नजर आती है। स्वाभाविक रुप से बच्चे शरारती ओर नटखठ होते हैं और होना भी चाहिए। चम्पा भी ऐसे ही स्वभाववाली लड़की है। उसका यह स्वभाव तभी सामने आता है जब कवि कलम लेकर लिखने बैठते हैं, तो देखते हैं उनकी कलम गायब है और जैसे तैसे वे उसे ढूंढ कर लाते हैं तब तक चम्पा उनके कागज गायब कर देती है। उसके इस शरारतीपन से परेशानी का वर्णन करते हुए कवि लिखते हैं कि, चम्पा -

" कभी-कभी ऊधम करती है
कभी-कभी वह कलम चुरा देती है
जैसे तैसे उसे ढूँढकर जब लाता हूँ
पाता हूँ- अब कागज गायब
परेशान फिर हो जाता हूँ "[2]

भोलापण और अबोधता :-

बच्चों में भोलापन और अबोधता होती है और वही उनकी सच्ची पहचान भी होती है। कवि ने बच्चों के भोलेपन और अबोधता का चित्रण चम्पा के माध्यम से इस कविता में किया है। कवि को कागज पर लिखता हुआ देखकर चम्पा का कवि को यह पूछना कि,

"तुम कागद ही गोदा करते हो दिनभर
क्या यह काम बहुत अच्छा है"[3]

यहां चम्पा का भोलापन एवं अबोधताता का हमें परिचय मिलता है, जो ग्रामीण परिवेश में रहनेवाले बच्चों में अक्सर हम देखा करते हैं।

गांधीजी के प्रति सम्मान :-

त्रिलोचन सिंह ने अपनी इस कविता के माध्यम से चम्पा के बाल सुलभ स्वभाव का वर्णन करते-करते महात्मा गांधी के प्रति सम्मान को भी व्यक्त किया है। महात्मा गांधी ने हमेशा शिक्षा एवं पढ़ाई को महत्वपूर्ण माना है। उन्होंने गांव की ओर चलने का मंत्र भी दिया था। वे अक्सर कहां करते थे कि भारत की सही पहचान गांव ही है और गांव के विकास से ही भारत का विकास हो सकता है। असली भारत तो गाँव में ही बसा हुआ है ऐसा उनका मानना था। इस कविता में कवि ने महात्मा गांधीजी की इसी पहचान को व्यक्त किया है। जब चम्पा लिखते बैठे कवि को क्या लिखना अच्छा है ? ऐसा पूछती है, तब कवि का उसे यह कहना कि,

" चम्पा, तुम भी पढ़ लो
हारे गाढे काम सरेगा
गाँधी बाबा की इच्छा है -
सब जन पढ़ना - लिखना सीखें "[4]

यह महात्मा गांधीजी का गाँव के प्रति प्रेम, उनके शिक्षा विषयक विचार और कवि के मन में महात्मा गांधी के प्रति सम्मान को भी व्यक्त करता है।

बालसुलभ जिज्ञासा :-

छोटे बच्चों में जिज्ञासा का भाव अधिक रहता है। उसके मन में जिस विषय को लेकर जिज्ञासा उत्पन्न होती है

उसे वह सहजता और स्पष्टता के साथ पूछते हैं। कवि को कागज पर लिखता देखकर चम्पा के बाल सुलभ मन में यह आश्चर्य और जिज्ञासा उत्पन्न होती है कि इन काले-काले चिन्हों से ये सभी स्वर कैसे निकला करते हैं। जब कवि उसे गाँधी बाबा की पढ़ाई करने की बात करते हैं तब चम्पा का यह कहना कि

" तुम तो कहते थे गाँधी बाबा अच्छे हैं
वे पढ़ने - लिखने की कैसे बात कहेंगे
मैं तो नहीं पढ़ूंगी " [5]

यह चम्पा के बाल सुलभ स्वभाव एवं जिज्ञासा को व्यक्त करता है।

सृजनात्मकता :-

मनुष्य के जीवन में सृजनात्मकता बहुत महत्वपूर्ण होती है जिससे मनुष्य नित नूतनता का निर्माण करते रहता है। इस कविता में चम्पा पढ़ी-लिखी नहीं है। लेखक जब पढ़ने लिखने बैठता है तब उसे देखकर चम्पा को आश्चर्य होता है कि यह काले-काले अक्षरों से यह विविध स्वर कैसे निकलते हैं। कविता में चम्पा का आश्चर्य से यह सोचना कि,

" इन काले चिन्हों से कैसे यह सब स्वर
निकला करते हैं " [6]

कविता की ईस पंक्ति में आयी चंपा की यह सोच सृजनात्मक को व्यक्त करती है। इसके साथ-साथ कवि के द्वारा 'चम्पा पढ़ लेना अच्छा है' यह कहना भी सृजनात्मकता की ओर संकेत करता है।

ग्रामीण परिवेश का चित्रण :-

इस कविता में चित्रित चम्पा देहात में रहनेवाली लड़की है। वह जिस गांव में रहती है वहां लड़कों का पढ़ना लिखना अच्छा नहीं माना जाता था, लड़की के पढ़ने की बात तो दूर उसके बारे में पढ़ाई को लेकर सोचना भी गलत माना जाता था यही बात चम्पा के दिमाग में थी। इसी कारण वह पढ़ना नहीं चाहती। कवि ने इस कविता में चम्पा के माध्यम से ग्रामीण परिवेश का चित्रण किया है, जहाँ ग्वाले गाय, भैंसों का पालन-पोषण करते हैं। वहाँ लड़कों की तरह लड़कियाँ भी चरवाही करने जाती हैं। जैसे -

" चंपा सुंदर की लड़की है
सुंदर ग्वाला है : गाय-भैंसे रखता है
चम्पा चौपायों को लेकर
चरवाही करने जाती है
चम्पा अच्छी है
चंचल है
नटखट भी है " [7]

शहरी परिवेश का विरोध :-

आज हम देखते हैं कि ग्रामीण लोगों के मन में शहरों के प्रति आकर्षण बढ़ता जा रहा है। आज व्यवसाय या नौकरी पाने की इच्छा से लोग गांव छोड़कर शहर की ओर जा रहे हैं। इसका संकेत भी कविता में मिलता है जब कवि चम्पा को कहता है कि तुम्हारा जब विवाह होगा और तुम गौने चली जाओगी, तो तुम कुछ दिन ही तुम्हारे पति के साथ रह पाओगी। तुम्हारा पति तुम्हें छोड़कर कलकत्ता चला जाएगा। यहां 'पति कलकत्ता चला जाएगा।' इस वाक्य से कवि शहर की ओर गांव के लोगों के बढ़ते कदमों को व्यक्त करता है, जो काम या नौकरी की तलाश में गांव छोड़कर शहर की ओर जा रहे हैं। लेकिन कवि के जवाब में चम्पा का यह उत्तर देना कि,

" मैं तो ब्याह कभी न करुँगी
और कहीं जो ब्याह हो गया
तो मैं अपने बालम को संग साथ रखूंगी
कलकत्ता मैं कभी न जाने दूंगी
कलकत्ते पर बजर गिरे।" [8]

यह चम्पा के मन में शहर के प्रति विरोधी भाव को भी व्यक्त करता है। यहां चम्पा के मुख से 'कलकत्ते पर बजर गिरे' कहलवाकर कवि ने शहरी वातावरण का तीव्रता के साथ विरोध करते हुए एक दृष्टि से शहर की अपेक्षा गांव के प्रति आकर्षण को ही व्यक्त किया है।

पढाई की आवश्यकता पर बल :-

यह कविता सन 1940 - 41 के आसपास लिखी गई है। उस समय अंग्रेजों की सत्ता थी और हमारे समाज में खास कर लड़कियों को पढाना नहीं चाहिए यह यह गलत सोच थी जिसे हम अंधश्रद्धा भी कह सकते हैं। उस समय लोगों को पढ़ाई का महत्व बताने की आवश्यकता थी, जिसका निर्वाहन साहित्यकारों ने अपने साहित्य के माध्यम से किया है। त्रिलोचन सिंह ने भी इस कविता के माध्यम से शिक्षा के महत्व को प्रस्तुत किया है। कवि त्रिलोचन को लिखते हुए देखकर बडे आश्चर्य के साथ चम्पा पूछती है कि तुम दिन भर कागज पर लिखते रहते हो क्या यह अच्छा है, तब कवि शिक्षा की आवश्यकता पर बल देते हुए उसे कहते हैं -

"चम्पा, पढ़ लेना अच्छा है
ब्याह तुम्हारा होगा, तुम गौने जाओगी,
कुछ दिन बालम संग साथ रह चला जाएगा जब कोलकत्ता
बड़ी दूर है वह कोलकत्ता
कैसे उसे संदेसा दोगी
कैसे उसके पत्र पढ़ोगी
चंपा पढ़ लेना अच्छा है।" [9]

अर्थात कवि चंपा को यह समझाते हुए कहता है कि तुम्हारी शादी के बाद जब तुम्हारा पति तुम्हें छोड़कर दूर शहर में चला जाएगा तब उसे तुम अपना संदेशा कैसे दोगी ? या उनके द्वारा प्राप्त पत्र कैसे पढ़ोगी ? इसीलिए तुम्हें पढ़ना आवश्यक है। यहाँ पढ़ाई की आवश्यकता पर बल दिया गया है।

गाँव के प्रति आकर्षण :-

कवि द्वारा लिखी हुई इस कविता का वह समय है, जब अंग्रेजों के खिलाफ देश में आंदोलन तेज था और खास करके महात्मा गांधी जी का असहयोग आंदोलन तेजी पर था। गांधीजी गांव के विकास पर बल दे रहे थे और देश की सही पहचान गांव को ही बता रहे थे। यहां कवि पर गांधीजी की इसी विचारधारा का प्रभाव पड़ा हुआ हमें दिखाई देता है। कविता में चंपा का पढ़ाई न करने की बात करते हुए शहरी सभ्यता का विरोध कर अपने पति को कलकत्ता कभी न जाने दूंगी यह कहते हुए कलकत्ते पर वज्र गिरे ऐसा कहना एक दृष्टि से कवि के द्वारा शहर का विरोध कर गांव के प्रति अपनी आत्मीयता को ही व्यक्त करता है।

लोक - भाषा का प्रयोग :-

त्रिलोचन ने अपनी इस कविता में लोक-भाषा का प्रयोग कर ग्रामीण वातावरण का निर्माण करते हुए बोलचाल के साथ-साथ लोक भाषा का प्रयोग भी किया है। कवि ने अपनी कविता के लिए कोई नई भाषा नही गढ़ी बल्कि पहले से मौजूद जीवित भाषा को उसकी जीवंतता के साथ स्वीकार किया है। उस भाषा में उन लोगों को अपने आप बोलने दिया है, जिसको अब तक बोलने का अवसर नहीं मिला था। इस कविता की भाषा खड़ीबोली है लेकिन उसमें 'अच्छर' अक्षर नहीं हुआ, न कि 'बजर' वज्र हुआ है। 'चीन्हती' क्रिया भी अपनी सहजता के साथ आयी है। वाक्य-विन्यास गद्य का होकर भी उसमें लय अंतर्निहित है। यहां 'चीन्हती' से तात्पर्य पहचानती, 'चौपायों' अर्थात चार पैरवाले जानवर, 'बजर' गिरे से तात्पर्य वज्र गिरना या भारी आपत्ति आना, 'हारे गाढे काम सरेगा' अर्थात कठिनाई में काम आएगा आदि शब्दों का प्रयोग किया गया है, जो ग्रामीण परिवेश की जीवंतता को चित्रित करता है।

निष्कर्ष :-

इस प्रकार 'चम्पा काले-काले अच्छर नहीं चीन्हती' इस कविता के माध्यम से कवि ने गाँव के प्रति अपनी आत्मीयता को व्यक्त किया है। इस कविता के माध्यम से कुछ निष्कर्ष बिंदु हमारे सामने आते हैं। जैसे -

इस कविता के माध्यम से कवि ने ग्रामीण परिवेश का चित्रण किया है।

1. ग्रामीण युवती का भोलापन, सहज स्वभाव, अबोधता और उसके नटखटताक को अभिव्यक्ति मिली है।
- कविता के माध्यम से कवि ने शिक्षा के महत्व पर बल दिया है।
1. कवि ने शहरों के प्रति अपने आक्रोश को व्यक्त करते हुए गांव के प्रति अपनी आत्मीयता को भी अभिव्यक्त किया है।
2. कविता में चम्पा के माध्यम से गंवई गांव के एक बे पढ़े - लिखे आदमी की स्वाभाविकता, सहजता और प्रामाणिकता को अभिव्यक्त किया गया है।
3. कविता में कवि ने लोकभाषा का प्रयोग किया है। उसके लिए कोई नई भाषा का प्रयोग न करते हुए मौजूद सीमित भाषा को एक जीवंतता के साथ ग्रहण किया है।
4. कवि त्रिलोचन ने अपनी इस कविता के माध्यम से पैसों के खिलाफ इंसानी रिश्तों को चित्रित किया है।

कुल मिलाकर त्रिलोचन ने इस कविता में गांव के जीवंत परिवेश को चित्रित करते हुए आधुनिक काल में शहर की चकाचौंध करनेवाली आबोहवा का विरोध कर गांव के प्रति पाठकों के मन में आत्मीयता का भाव जागृत कर उन्हें गांव के प्रति आकर्षित करने का प्रयास किया है।

संदर्भ सूची :-

1) संपा. डॉ.बालाजी भुरे, डॉ.व्यंकट पाटिल - काव्य तरंग - पृ. 100
2) संपा. डॉ.बालाजी भुरे, डॉ.व्यंकट पाटिल - काव्य तरंग - पृ. 100
3) संपा. डॉ.बालाजी भुरे, डॉ.व्यंकट पाटिल - काव्य तरंग - पृ. 100
4) संपा. डॉ.बालाजी भुरे, डॉ.व्यंकट पाटिल - काव्य तरंग - पृ. 100
5) संपा. डॉ.बालाजी भुरे, डॉ.व्यंकट पाटिल - काव्य तरंग - पृ. 101
6) संपा. डॉ.बालाजी भुरे, डॉ.व्यंकट पाटिल - काव्य तरंग - पृ. 100
7) संपा. डॉ.बालाजी भुरे, डॉ.व्यंकट पाटिल - काव्य तरंग - पृ. 100
8) संपा. डॉ.बालाजी भुरे, डॉ.व्यंकट पाटिल - काव्य तरंग - पृ. 101
9) संपा. डॉ.बालाजी भुरे, डॉ.व्यंकट पाटिल - काव्य तरंग - पृ. 101

Aayushi International Interdisciplinary Research Journal
ISSN 2349-638X
www aiirjournal.com